अध्याय 5 — मित्रता के पीछे छिपा उद्देश्य

कॉलेज में युवराज को आए लगभग एक सप्ताह बीत चुका था।

इन सात दिनों में उसने स्वयं को आरव और उसके मित्रों के समूह में सम्मिलित कर लिया था।

अब वह उनके साथ बैठता, कैंटीन में भोजन करता और उनकी हँसी-मजाक में भी भाग लेता था।

उसके व्यवहार में पहले दिन की अपेक्षा काफी परिवर्तन दिखाई देने लगा था।

कम से कम उसके मित्रों को तो ऐसा ही लगता था।

लेकिन वास्तव में युवराज बदल नहीं रहा था। वह केवल अपने व्यवहार को परिस्थिति के अनुसार बदलना सीख रहा था।

मित्रता और दिखावा

उस दिन वीर का जन्मदिन था।

ईशा और काव्या ने मिलकर उसके लिए एक छोटा सा केक मँगवाया था।

आरव अपने साथ एक उपहार लाया था।

वीर ने उपहार खोलकर देखा। उसमें एक सुंदर घड़ी थी।

“भाई, इसकी क्या आवश्यकता थी?”

आरव ने हँसते हुए कहा—

“ताकि कभी तो समय पर कॉलेज पहुँचा करो।”

सभी हँसने लगे।

तभी युवराज वहाँ पहुँचा।

“अरे! आज किसी का जन्मदिन है?”

काव्या ने कहा—

“हाँ, आज हमारे वीर महाराज का जन्मदिन है।”

युवराज ने वीर को जन्मदिन की शुभकामनाएँ दीं और उसकी नई घड़ी की ओर देखा।

“कितने की है यह?”

वीर ने कहा—

“पता नहीं, आरव ने दी है।”

युवराज ने घड़ी अपने हाथ में लेकर देखी।

“ऐसा करो, शाम को मेरे साथ चलना। मैं तुम्हें इससे कहीं अच्छी घड़ी दिलवा दूँगा।”

वीर ने अपनी घड़ी वापस लेते हुए कहा—

“धन्यवाद भाई, लेकिन मेरे पास अब इससे अच्छी घड़ी नहीं हो सकती।”

युवराज ने आश्चर्य से पूछा—

“क्यों? इसमें ऐसा क्या विशेष है?”

वीर ने आरव के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—

“यह खरीदने वाले ने इसकी कीमत देखी होगी, लेकिन मुझे देने वाले का प्रेम दिखाई देता है।”

युवराज कुछ क्षण शांत रहा।

उसे एक बार फिर ऐसी बात सुनने को मिली थी, जिसे समझना उसके लिए कठिन था।

एक प्रस्ताव

युवराज ने सभी की ओर देखकर कहा—

“आज शाम की पार्टी मेरी ओर से। शहर के सबसे अच्छे होटल में चलेंगे।”

वीर ने उत्साह से पूछा—

“सच में?”

“हाँ, जो चाहो खाना, जो चाहो करना। खर्च की चिंता मत करना।”

ईशा ने काव्या की ओर देखा।

काव्या ने कहा—

“लेकिन हमने तो पहले से ही शाम की योजना बना रखी है।”

“क्या योजना?”

आरव ने उत्तर दिया—

“शहर के बाहर एक सुंदर झील है। हम वहाँ जाएँगे, कुछ समय साथ बिताएँगे और लौटते समय भोजन करेंगे।”

युवराज हँसने लगा।

“जन्मदिन मनाने के लिए झील के किनारे जाओगे?”

वीर ने कहा—

“हाँ, पिछले वर्ष भी वहीं गए थे।”

युवराज ने काव्या की ओर देखकर पूछा—

“तुम्हें भी यही सब पसंद है?”

“बहुत अधिक।”

काव्या का उत्तर इतना सहज था कि युवराज आगे कुछ कह ही नहीं पाया।

कुछ क्षण सोचने के बाद उसने पूछा—

“क्या मैं भी तुम लोगों के साथ चल सकता हूँ?”

आरव ने कहा—

“क्यों नहीं? अब तुम भी हमारे मित्र हो।”

युवराज मुस्कुरा दिया।

झील के किनारे

संध्या का समय था।

सूर्य धीरे-धीरे अस्त हो रहा था। उसकी सुनहरी किरणें झील के शांत जल पर पड़ रही थीं।

पाँचों मित्र झील के किनारे बैठे थे।

वीर और ईशा एक-दूसरे के चित्र ले रहे थे। आरव और काव्या कुछ दूरी पर बैठकर बातें कर रहे थे।

युवराज अकेला बैठा अपने मोबाइल को देख रहा था।

उसने आसपास दृष्टि डाली।

न कोई महँगा भोजनालय, न विशेष सुविधाएँ और न किसी प्रकार की भव्य व्यवस्था।

फिर भी सभी इतने प्रसन्न थे।

वह उठकर काव्या और आरव के पास पहुँच गया।

“तुम दोनों कब से एक-दूसरे को जानते हो?”

काव्या ने मुस्कुराते हुए कहा—

“काफी समय से।”

“और प्रेम कब से है?”

काव्या ने आरव की ओर देखा।

“इनसे पूछो। इन्होंने तो बताने में ही बहुत समय लगा दिया था।”

आरव हँसने लगा।

“अच्छा! जैसे तुमने पहले ही बता दिया था।”

काव्या ने कहा—

“लड़कियाँ प्रत्येक बात बोलकर नहीं बतातीं। कुछ बातें समझनी भी पड़ती हैं।”

तीनों हँसने लगे।

युवराज ने आरव से पूछा—

“यदि भविष्य में तुम्हारे पास पर्याप्त धन नहीं हुआ, तो तुम काव्या को प्रसन्न कैसे रखोगे?”

आरव ने उसकी ओर देखा।

“परिश्रम करूँगा। धन भी कमाऊँगा। लेकिन उसकी प्रसन्नता का पूरा भार धन पर नहीं डालूँगा।”

युवराज ने कहा—

“केवल प्रेम से जीवन नहीं चलता, आरव।”

इस बार काव्या ने उत्तर दिया—

“सही कहा। लेकिन केवल धन से भी जीवन नहीं चलता, युवराज।”

युवराज निरुत्तर हो गया।

एक नया प्रश्न

कुछ देर बाद युवराज ने जानबूझकर बातचीत का विषय बदल दिया।

“तुम लोगों के पास कोई शक्ति है?”

वीर ने उसकी ओर देखा।

“अचानक शक्तियों की बात कैसे याद आ गई?”

युवराज ने गर्व से कहा—

“मेरे पास एक से अधिक शक्तियाँ हैं। पिताजी कहते हैं कि आने वाले समय में जिसके पास शक्ति नहीं होगी, उसका संसार में कोई महत्व नहीं होगा।”

आरव को अपने दादाजी की बातें स्मरण हो आईं।

जिसे तुम सम्मान समझ रहे हो, संभव है वह भय हो।

आरव ने पूछा—

“यदि किसी दिन तुम्हारी सारी शक्तियाँ समाप्त हो जाएँ, तो क्या तुम्हारा महत्व भी समाप्त हो जाएगा?”

युवराज हँसने लगा।

“मेरी शक्तियाँ समाप्त होने से पहले ही उनकी ऊर्जा भर दी जाती है। उसकी चिंता तुम्हें करने की आवश्यकता नहीं है।”

“मैं तुम्हारी शक्तियों की नहीं, तुम्हारे व्यक्तित्व की बात कर रहा हूँ।”

युवराज ने आरव की ओर देखा।

दोनों की विचारधाराएँ एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न थीं।

एक के लिए शक्ति जीवन को सुरक्षित बनाने का माध्यम थी, जबकि दूसरे के लिए शक्ति स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ सिद्ध करने का साधन।

तभी वीर ने कहा—

“आज मेरा जन्मदिन है। तुम दोनों किसी और दिन संसार की समस्याओं का समाधान कर लेना।”

सभी हँसने लगे।

घर वापसी

रात होने पर सभी अपने घरों की ओर निकल गए।

युवराज अपनी कार में बैठा पूरे दिन की घटनाओं के विषय में सोच रहा था।

वह पिछले सात दिनों से काव्या के निकट आने का प्रयास कर रहा था।

लेकिन उसे अनुभव हो रहा था कि काव्या और आरव के बीच का संबंध उसकी कल्पना से कहीं अधिक गहरा था।

उसने अपना मोबाइल निकाला।

कुछ क्षण सोचने के बाद उसने आरव और काव्या के साथ लिया गया एक चित्र देखा।

उसकी दृष्टि आरव के चेहरे पर टिक गई।

“जब तक तुम उसके साथ हो, वह मेरी ओर देखेगी भी नहीं।”

उसने मोबाइल बंद कर दिया।

आज पहली बार युवराज ने काव्या को प्रभावित करने के स्थान पर आरव को उसके जीवन से दूर करने के विषय में सोचना प्रारंभ किया था।

उधर आरव अपने घर पहुँचा।

दादाजी उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

“आज आने में देर हो गई?”

“हाँ दादाजी, वीर का जन्मदिन था। एक नया मित्र भी बना है हमारा।”

दादाजी मुस्कुराए।

“अच्छी बात है। क्या नाम है तुम्हारे नए मित्र का?”

“युवराज।”

दादाजी की मुस्कान कुछ क्षण के लिए थम गई।

“युवराज?”

“हाँ दादाजी, बहुत धनवान परिवार से है। क्यों, क्या हुआ?”

दादाजी ने स्वयं को संभालते हुए कहा—

“कुछ नहीं। जाओ, हाथ-मुँह धो लो। भोजन तैयार है।”

आरव अपने कमरे की ओर चला गया।

दादाजी वहीं बैठे रहे।

उनके चेहरे पर चिंता दिखाई देने लगी थी।

उन्होंने एक लंबी साँस ली और स्वयं से कहा—

“ओह! तो युवराज के आने का समय हो गया... खैर, होनी को कौन टाल सकता है? नियति को कौन रोक सकता है?”

उन्होंने आरव के कमरे की ओर देखा। उनके चेहरे पर चिंता के साथ एक गहरी पीड़ा भी दिखाई दे रही थी।

“अब तुम्हें थोड़ा सावधान होना होगा, आरव। तुम्हारी हँसी-मस्ती के दिन समाप्त होने वाले हैं।”

कुछ क्षण मौन रहने के बाद उन्होंने भारी स्वर में कहा—

“आखिर वह पल आ ही गया, जिसका मुझे भय था। लेकिन यह पल भी तो आना ही था... मैं कर भी क्या सकता हूँ?”

दादाजी ने धीरे से अपनी आँखें बंद कर लीं।

आखिर दादाजी को आने वाले समय के विषय में इतना कुछ कैसे पता था**?**

अध्याय **5** समाप्त।